रानीगंज गर्ल्स कॉलेज

भारतेन्दु हरिश्चंद्र- 9 सितंबर 1850 – 6 जनवरी 1885

हिंदी विभाग

डिजिटल भिति पत्रिका

अंक - 2021-22

विषयानुक्रमणिका

विषय	पेज संख्या
❖ भारतेन्दु हरिश्चंद्र की जीवनी और कृतित्व	5-6
❖ नाटककार के रूप में भारतेंदु हरिश्चंद्र	7-12
❖ हिंदी निबंध के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान	13-14
❖ हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान	15-16
❖ हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान	17-19
❖ भारतेन्दु हरिश्चंद्र की कविताओं की विशेषताएँ	20-23

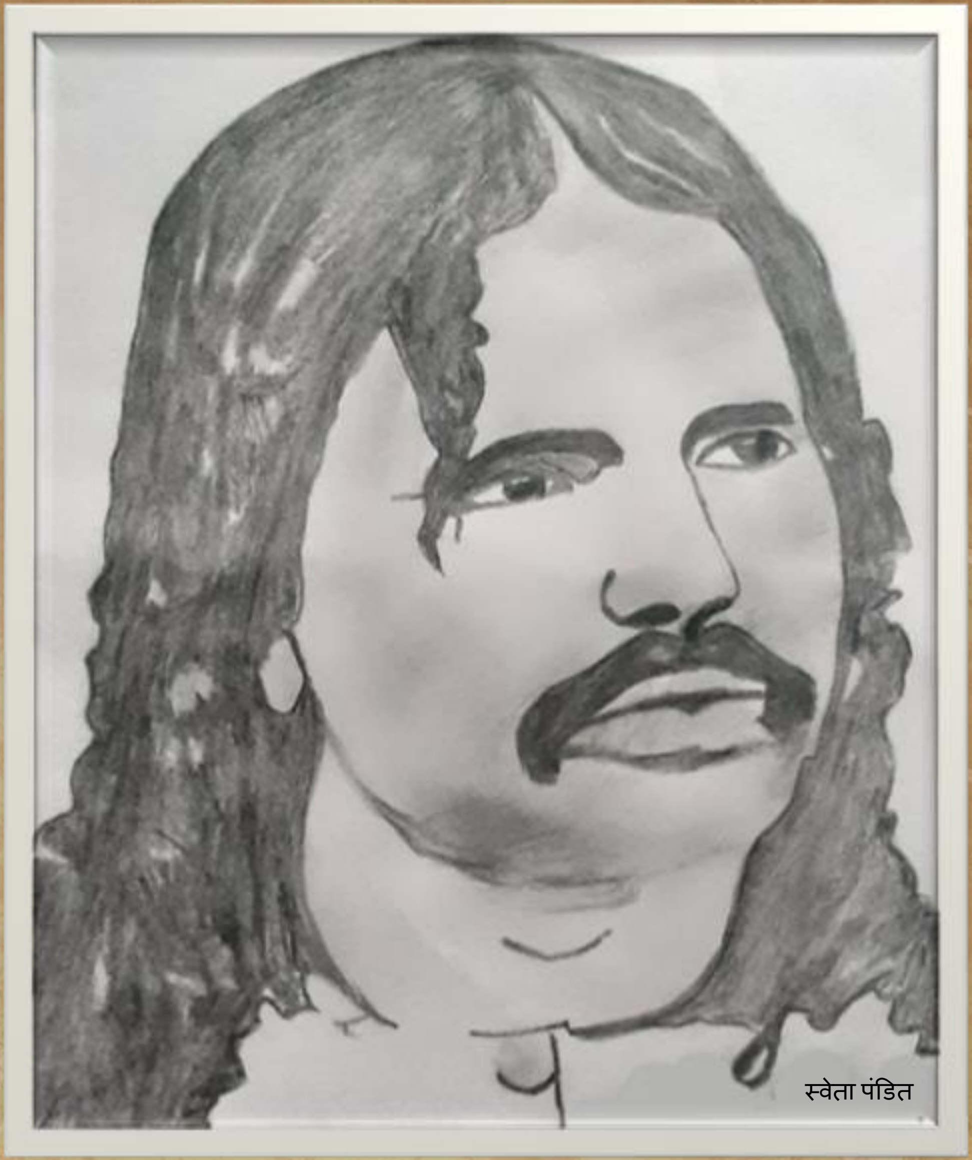

भारतेन्दु हरिश्चंद्र- 9 सितंबर 1850 – 6 जनवरी 1885

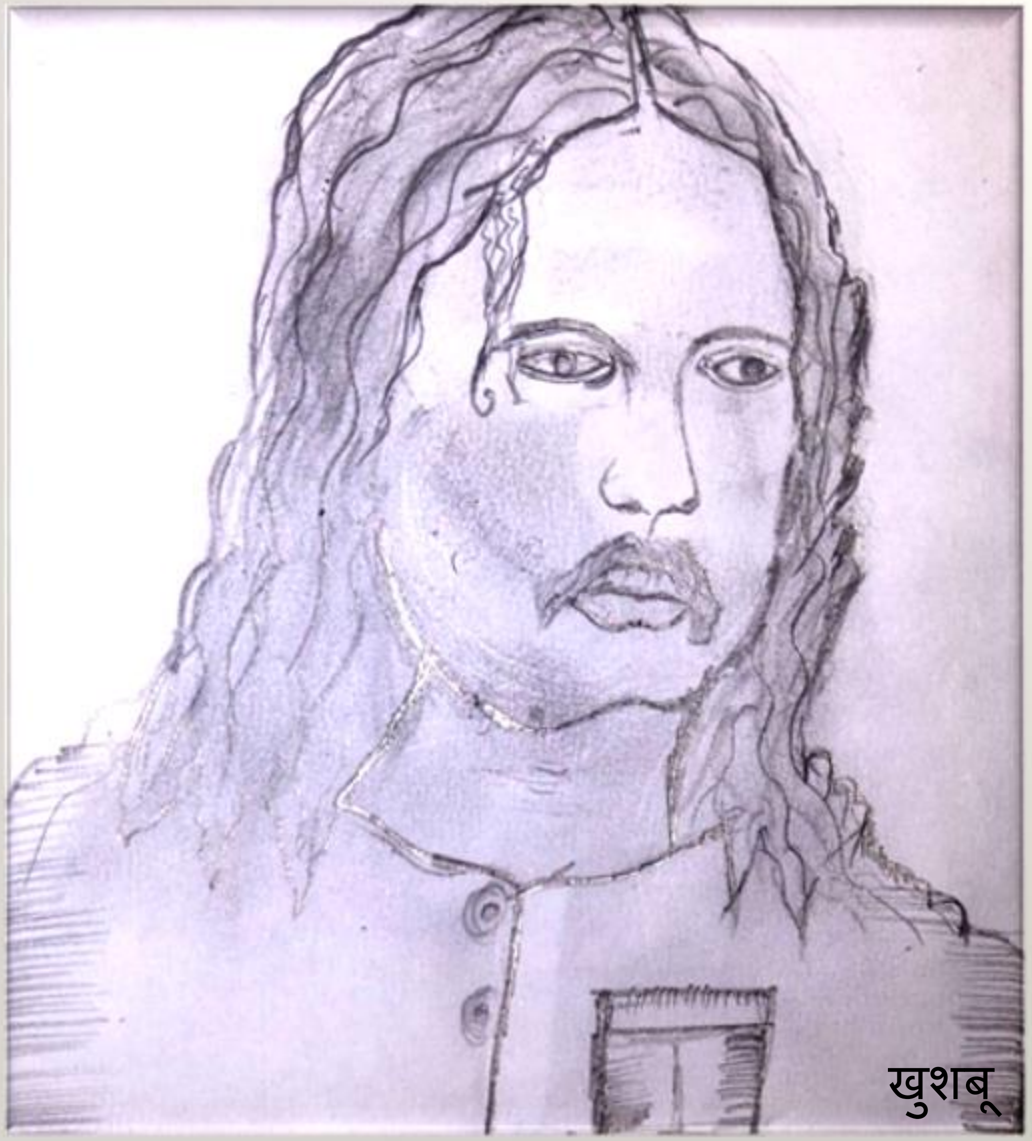

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

4

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की जीवनी और कृतित्व

हिंदी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चन्द का जन्म 9 सितम्बर1850 को वाराणसी में एक प्रसिद्ध और धनी अग्रवाल परिवार में हुआ था| इनके पितागोपाल चन्द्र उपनाम “गिरधर दास” भी बड़े काव्य रसिक और विद्वान थे जिन्होंने 40ग्रंथो की रचना की| घर के इस वातावरण का हरिश्चन्द्र पर प्रभाव पड़ा परन्तु बाल्यकालसुख से नही बीता| वे 5 वर्ष के थे तभी माता पार्वती देवी का और 10 वर्ष के थे तभीपिता का देहांत हो गया| इसका प्रभाव उनकी शिक्षा दीक्षा पर पड़ा फिर भी पहले घर परसंस्कृत, हिंदी उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास किया और फिर कुछ समय तक क्वींस कॉलेजके स्कूल विभाग में पढ़ते रहे| चंचल स्वभाव के होने के कारण यद्यपि नियमितपढाईमें इनका मन नही लगा फिर भी संस्कृत ,हिंदी और अंग्रेज़ी के साथ साथ मराठी ,बांग्लापंजाबी ,उर्दू आदि भाषाए स्वाध्याय से सीख ली| उन्होंने “निज भाषा उन्नति” को अपनेजीवन का ध्येय बनाया| वे एक उत्कृष्ट कवि, सशक्त व्यंग्यकार, सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यकार थे। इसके अलावा वे लेखक, कवि, संपादक, निबंधकार, एवं कुशल वक्ता भी थे।

भारतेन्दु जी ने मात्र 34 वर्ष की अल्पायु में ही विशाल साहित्य की रचनाकी।इन्होंने अपने जीवन काल में लेखन के अलावा कोई दूसरा कार्य नहीं किया। तभी तो 35 वर्ष की अल्पायु में ही 72 ग्रन्थों की रचना करना सम्भव हो सकता था। पैंतीस वर्ष की आयु (सन् 1885) में उन्होंने मात्रा औरगुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा, इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समूचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया।

साहित्य सेवा के साथ-साथ भारतेंदु जी की समाज सेवा भी चलती थी। उन्होंने कई समस्याओं की स्थापना में अपना योग दिया। दीन-दुखियों, साहित्यिकों तथा मित्रों की सहायता करना वे अपना कर्तव्य समझते थे। धन के अत्यधिक व्यय से भारतेंदु जी ऋणी बन गए और दुश्चिंताओं के कारण उनका शरीर शिथिल होता गया। परिणाम स्वरूप 1885 में अल्पायु में ही मृत्यु ने उन्हें ग्रस लिया।

साहित्यिक कृतियाँ

भारतेंदु हरिश्चन्द्र की रचनाएँ-भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी ने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है इनहोंने नाटक, निबंध संग्रह, काव्य कृतियाँ, आत्मा,कथा, यात्रा वृतांत लिखे हैं।

मौलिक नाटक- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873 ई., प्रहसन),सत्य हरिश्चन्द्र (1875) श्री चंद्रावली(1876), विषस्य विषमौषधम्(1876), भारत दुर्दशा (1880), नीलदेवी (1881) अंधेर नगरी (1881)।

अनूदित नाट्य रचनाएँ- विद्यासुन्दर(1868), धनंजय विजय(1873), कर्पूर मंजरी(1875) भारत जननी (1877), मुद्राराक्षस (1878), दुर्लभ बंधु (1880)।

निबंध संग्रह-नाटक, कालचक्र(जर्नल), लेवी प्राण लेवी, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है? कश्मीर कुसुम, जातीय संगीत, संगीत सार, हिंदी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा।

काव्यकृतियां- भक्तसर्वस्व (1870), प्रेममालिका (1871), प्रेम माधुरी (1875) प्रेम-तरंग (1877), उत्तरार्द्ध भक्तमाल (1876-77), प्रेम-प्रलाप (1877), होली (1879) मधु मुकुल(1881), राग-संग्रह (1880), वर्षा-विनोद (1880), विनय प्रेम पचासा (1881) फूलों का गुच्छा- खड़ीबोली काव्य (1882), प्रेम फुलवारी (1883) कृष्णचरित्र (1883) दानलीला, तन्मय लीला, नये ज़माने की मुकरी, सुमनांजलि बन्दर सभा(हास्य व्यंग्य) बकरी विलाप (हास्य व्यंग्य)।

कहानी- अद्भुत अपूर्व स्वप्न

यात्रा वृत्तान्त- सरयूपार की यात्रा, लखनऊ

आत्मकथा- एक कहानी- कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

उपन्यास- पूर्णप्रकाश, चन्द्रप्रभा

6

नाटककार के रूप में भारतेंदु हरिश्चंद्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र का सबसे बड़ा योगदान नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में है। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिन्दी के प्रथम मौलिक नाटककार हैं। उन्होंने न केवल नाटक को युगीन समस्याओं से जोड़ा, बल्कि नाटक और रंगमंच के आपसी संबंध को समझाते हुए रंग-कर्म भी किया। भारतेंदु ने पारसी नाटकों के विपरीत जनसामान्य को जागृत करने एवं उनमें आत्मविश्वास जगाने के उद्देश्य से नाटक लिखे हैं। उनके नाटकों में देश-प्रेम,न्याय, त्याग, उदारता जैसे मानवीय मूल्यों की झंकार स्पष्ट सुनाई पड़ती है। उनके नाटकों में प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम दिखलाई पड़ता है। यहीं नहीं उनके ऐतिहासिक पात्रों से आम-जनमानस को प्रेरणा लेने की भी आवश्यकता है। भारतेंदु ने नाटक लेखन का प्रारंभ बंगला के(विदया सुंदर,1867) नाटक के अनुवाद से किया। उन्होंने मौलिक और अनूदित कूल सत्रह नाटकों की रचना की। उनके नाटकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1.वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति:- यह भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित एक प्रहसन नाटक है। इसका प्रकाशन वर्ष 1873 ई॰ है। इसकी कथा तात्कालीन भारतीय समाज के सामाजिक जीवन से ली गई है। तात्कालीन जीवन में धार्मिक मतभेद का जो भ्रम-जाल फैला था, उसके कारण सामाजिक जीवन में जो बुराइयां आईं थीं, उन बुराइयों को प्रहसन में स्थान दिया गया है। प्रहसन का दृश्य-विधान और पात्र-योजना सूंदर बन पड़ा है। प्रहसन में आए हुए पात्र अधम है, जो जीवन की विकृतियों का प्रतिनिधित्व करते है। प्रहसन लिखने के पिछे लेखक का मुख्य उद्देश्य था-दुष्ट प्रवृत्तियों, पाखंडों और मतभेदों के कारण जीवन में आई विकृतियों को दिखाकर भारतवासियों को भारतीय संस्कृति के उदात्व तत्वों की ओर ले जाना। अर्थात भारतीयता के मार्ग पर चलना।

2.प्रेमजोगिनी:- सन 1875 ई॰में भारतेंदु ने 'प्रेमजोगिनी' नामक नाटक लिखा था। इस नाटक के केवल चार ही अंक भारतेंदु पूरे कर सके थे। नाटक का प्रत्येक अंक अपने आप में पूर्ण है। प्रत्येक अंक में भिन्न-भिन्न पात्र दिखाई देतें हैं। प्रामुख पात्रों में है-झपटिया मिश्र, दो गुजराती, छककू जी,माखनदास, वनिता दास आदि। इस नाटक का पहला दृश्य काशी के मंदिर के चौक का है। इसमें धार्मिक मुल्लमा ओढे ढोंगी जीवन का उदघाटन किया गया है। दूसरे दृश्य में काशी के पंडो एवं दुकानदारों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। तीसरे दृश्य में मुगलसराय स्टेशन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। कुल मिलाकर चारों अंक काशी की यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत करता है।

3. भारत-दुर्दशा:- यह नाटक भारतेंदु की भारतीयता का उत्तम नमूना है। इसका प्रकाशन वर्ष1880ई॰ है। इसमें भारत की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। नाटक को छोटे-छोटे छः अंको में विभाजित किया गया है। रचना में नायक तो भारत है, किन्तु नायिका कोई नहीं। न तो इसमें प्रस्तावना है और न ही अंत में भरत वाक्य। केवल आरंभ में मंगलाचरण दिया गया है। इसमें आए हुए सभी पात्र प्रतीक रूप में सामने आते हैं।

4.श्रीचंद्रावली नाटिका :- लेखक की सर्वोत्तम कृतियों में से एक श्री 'चन्द्रावली नाटिका' है। यह कृति सर्व प्रथम संवत 1933 में 'हरिश्चंद्र चंदिका' में छपी थी। नाटक के शास्त्रीय नियमों का इसमें पूर्णतः पालन किया गया है। कथावस्तु को प्रस्तावना और विषंकभय के बाद चार अंकों में बांटा गया है। दूसरे अंक में अंकावतार भी दिया गया है। नाटिका के नायक श्रीकृष्ण है और नायिका चंद्रभानु की पुत्री चन्द्रावली और राधा दोनों है। इसकी सम्पूर्ण कथा चंद्रावली और कृष्ण के प्रेम को आधार बनाकर लिखी गई है।

5. विषषयविषमौषधरम:- भाण शैली में लिखित यह नाटक सन्1875 ई॰ में लिखा गया था। सामान्यतः भाण के लक्षण होते हैं-इसमें एक ही अंक होता है, इसका कथानक कल्पित होता है और हास्य और वयंग्य की प्रधानता रहती है। कथासूत्र के अंतर्गत नाटककार ने बड़ोदरा के इतिहास का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। इस छोटे से प्रसंग को आधार बनाकर अंग्रेज़ों के हाथ शतरंज के मुहरें बने भारतीय राजाओं और उनके भावी भाग्य पर व्यंग्य किया है ।

6. सत्य हरिश्चंद्र:- इसका प्रकाशन वर्ष 1875 ई॰है। भारतेंदु ने इस नाटक के आरंभ में मंगलाचरण और प्रस्तावना न देकर अंत में भरत वाक्य दिया है। इस रचना के मुख्य पात्रों में है- राजा हरिश्चंद्र,विश्वामित्र, इन्द्र और नारद तथा गौण पात्रों में शव्या,चांडाल, उपाध्याय आदि। यह नाटक संस्कृत के नाटककार श्रेमीशवर कृत 'चंडकौशिक', के आधार पर लिखा गया है। इसमें राजा हरिश्चंद्र की सत्यप्रियता की कथा है। इंद्र के द्वारा स्वपन में ब्राहमण को राजपाट का दान करना, पत्नी और पुत्र को बेचकर स्वयं डोम के घर बिकना और अंत में देवताओं के द्वारा आशीर्वाद पाना इत्यादि प्रमुख घटनाएं हैं। सम्पूर्ण नाटक में नायक द्वारा भारतीयता का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

7. भारत जननी:- इसका प्रकाशन वर्ष 1877 ई॰ है। नाटक के उद्देश्य के संदर्भ में चर्चा करते हुए स्वयं नाटककार ने प्रस्तावना में लिखा है-" भारत भूमि और भारत संतान की यह दुर्दशा दिखाना ही ईस भारत जननी की इतिहास कर्तव्यता है"। नाटक में भारत वासियों को जगाने के लिए सरस्वती, दुर्गा और लक्ष्मी प्रयास करती है। दीन हीन अवस्था वाली भारत माता अपने सुपुत्रों को जगाती है । वे जाग कर मां से पेट भरने का उपाय पुछतें है। इस पर भारत जननी को लगता है कि इसका उपाय महारानी विक्टोरिया ही बता सकती है। उसी समय धैर्य आकर भारतवासियों से कहता है-" अभिमान, लोभ, अपमान, आत्मसम्मान, प्रशंसा, परजातनिंदा इन सब का सावधानी पूर्वक परित्याग करो। धैर्य को अवलंम करो..... अवश्य तुम लोगों की आकांक्षा पूरी होगी।“

8. नीलदेवी:- इसका प्रकाशन वर्ष 1880 ई. है। दुखांत नाटक का उत्तम उदाहरण 'नीलदेवी' नाटक में देखा जा सकता है। नाटक के प्रति नायक अमीर धोखे से नायक सूर्यदेव को क़ैद करता है। नीलदेवी नर्तकी का वेश धारण कर अमीर को मारकर सती हो जाती है। इसके साथ-साथ इसमें पागल की कथा एवं चपरगटटू की सहायक कथाएं भी है। चपरगटटू की कथा मुख्य कथा के साथ कोई संबंध नहीं रखती। नायिका के संवाद छोटे-छोटे गतिशील और नाटकीय तत्वों से परिपूर्ण है।

9

'नीलदेवी' नाटक को नाटककार ने सौद्देश्य लिखा है। लेखक को लगता है कि भारतीय गृहणियां भी वर्तमान
हीन अवस्था को लांघकर उन्नति करे, किन्तु भारतीय स्त्रीयों को यह विश्वास हो गया है कि हम तो सदा दलित हैं । अतः इस विश्वास के भ्रम को दूर करने के लिए भारतेंदु ने यह नाटक लिखा था।

9. अंधेर नगरी चौपट राजाः- इसका प्रकाशन वर्ष 1881ई. है। हास्य और व्यंग्यपूर्ण शैली में 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नाटक लिखा गया है। कथा संगठन में किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं है। नाटक की संपूर्ण कथा छः अंको में संगठित की गई है। प्रस्तुत नाटक के पीछे नाटककार का उद्देश्य था, तत्कालीन राजाओं की अंधेरगर्दी तथा उनकी अराजकता को जनता के सामने लाना।

10

10. सतीप्रताप:- नाटककार ने यह रचना सन 1884 ई. में लिखी थी। वे इसके केवल चार ही अंक लिख सकें। कुछ समय पश्चात यह नाटक राधा कृष्णदास ने पूरा किया। नाटक की कथा पुराण प्रसिद्ध सावित्री-सत्यवान की कथा है। नाटककार ने कथा को पुराणों का आधार देकर भारतीयता का परिचय दिया है। कथासूत्र के अंतर्गत सावित्री अपनी सखियों के साथ वन में घूमने जाती है । वहां सत्यवान को देखकर उस पर आसक्त होती है। सत्यवान की आयु उस समय केवल एक ही वर्ष शेष रह गई थी,जब यमराज उसे लेने आते हैं। उसी समय सावित्री अपने सतीत्व बल से सत्यवान के जीवन को पुनः प्राप्त करती है।

अनूदित नाटक:-

1.विदयासुंदर:- इसका प्रकाशन वर्ष1868 ई. माना जाता है। यह एक प्रेम कथा है। पात्रों में नायक सुंदर, नायिका विदया तथा हीरा मालिन प्रमुख है ।

2.रत्नावली:- संस्कृत से अनुदित इस नाटक का रचना काल संवत 1925 है। संस्कृत नाटककार श्री हर्ष द्वारा रचित 'नाटिका' के कुछ अंश का यह अनुवाद है।

3.पाखंड विडंबन:- इसका प्रकाशन वर्ष 1872 ई. है। भारतेंदु ने 'प्रबोधचंद्रोदय' का 'पाखंड विडंबन' नाम से हिन्दी अनुवाद किया था। नाटक के कथासूत्र में शांति और करुणा नामक दो सखियां हैं ।

4.मुद्राराक्षस:-इसका प्रकाशन वर्ष 1876 ई. है। महाकवि विशाख दत्त की रचना 'मुद्राराक्षस' का यह अनुवाद है। इसके कथासूत्र में चाणक्य अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चंद्रगुप्त को राज्यसीन करता है।

5. दुर्लभ बंधु:- भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'दुर्लभ बंधु' नाटक का पूर्णतः भारतीयकरण किया है। पात्रों के नाम, स्थानों के नाम तथा नाटकीय स्थिति को भारतीय अवतरण दिया गया है।

6.कपूर्र मंजरी:- कवि राजशेखर कृत 'कपूर्र मंजरी' का यह अनुवाद है। इसमें राजदरबार का सुंदर व्यंग्य पूर्ण चित्र उपस्थित किया गया है।

7. धनंजय विजय:-इसका प्रकाशन वर्ष 1873 ई. है । यह नाटक तीसरे अंक का हिन्दी अनुवाद है । जो किसंस्कृत में कांचन कवि द्वारा रचित है।

हिंदी निबंध के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी निबंध के जनक माने जाते हैं। उन्होंने हिंदी की दशा सुधारने के लिए पद्य के स्थान पर गद्य (निबंध) लिखने की शुरुआत की और सभी भारतवासियों को जगाते हुए कई निबंध लिखें। उनके निबंध जनचेतना जगाने में सफल सिद्ध हुए।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के निबंधों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?- यह निबंध लेखक ने 1884 ई. में बलिया के दादरी मेले के अवसर पर देशोंपकारी सभा में भाषण देने के लिए लिखा था। इसमें उन्होंने कुरीतियों और अंधविश्वासों को त्याग कर अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने, उद्योग धंधों को विकसित करने, सहयोग एवं एकता पर बल देने तथा सभी क्षेत्रों में आत्म निर्भर होने की प्रेरणा दी है।

2- दिल्ली दरबार दर्पण- दिल्ली में आयोजित एक दरबार का वर्णन इसमें किया गया है। यह दरबार 1877 ई. मैं आयोजित किया गया था। इसमें भारत के कई छोटे-छोटे राज्यों के राज्यकर्ता उपस्थित थे। इसमें रानी विक्टोरिया का भारत सम्राज्ञी पद धारण करने का उल्लेख है, साथ ही उनके साथ अन्य राजाओं का उल्लेख भी किया गया हैं।

3- स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन- यह निबंध भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिका 'कविवचन सुधा' मैं लिखा गया था। यह 1 जून 1885 ई.को प्रकाशित हुआ था। इसमें उन्होंने अपने समय में हो रहे धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का परिचय दिया है और उसके आपसी अंतर्विरोधों का भी उल्लेख किया हैं।

4 - संगीत सार- इसमें भारतेंदु हरिश्चंद्र ने गाना, बजाना, नाचना आदि के सम्मुचय को संगीत कहां हैं। वे कहते हैं कि कभी भारत में संगीत-शास्त्रियों के प्रति आस्था व्यक्त की जाती थी। आज उन्हीं का अपमान किया जा रहा है। संगीत का लोप होता जा रहा है, या लोप हो गया हैं। ऐसा तर्क देते हुए इस निबंध में संगीत के प्रति उस समय की धारणा व्यक्त करते है।

5 - भ्रूण हत्या- वर्तमान समय में भ्रूण हत्या एक सामाजिक समस्या बन गई है। इसे रोकने के लिए सरकार प्रयासरत है, परन्तु यह दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस निबंध में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भ्रूण-हत्या होने के कारण और उनके दुष्परिणाम आदि की चर्चा की है। वे यहां तक कह देते हैं कि भ्रूण हत्या समाज के लिए सबसे बड़ा कलंक है और महापाप भी है। ऐसे ही कई निबंध भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे गए हैं । ये सभी निबंध भारतीयों और अन्य के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान

हिंदी गद्य के विकास का पहला युग भारतेंदु-युग के नाम से जाना जाता है । भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी गद्य साहित्य के प्रथम साहित्यकार माने जाते हैं । अतः भारतेंदु के नाम से इस युग का नामकरण भी हुआ । इस युग में नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, पत्र-पत्रिकाएँ, अनुवाद आदि सभी विधाओं पर रचना की गयी है ।भारतेंदु ने इतिहास,भुगोल,विज्ञान,पुराण आदि विषयो पर स्वयं लिखा तथा अन्य लेखकों को लिखने के लिए प्रेरित किया । पत्र-पत्रिकाओं तथा समाज सेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी गद्य एवं भाषा को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया । भारतेंदु की प्रेरणा से अनेक साहित्यकार नाटय साहित्य की रचना के लिए प्रवृत्त हुए ,जिनमें लाला श्री निवास दास ,प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी बालकृष्ण भट्ट आदि प्रमुख हैं । निबंधकारो में भारतेंदु हरिश्चन्द्र,राधाकृष्ण दास,बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण,चौधरी अम्बिकादत्त व्यास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

इस युग में बंगला,संस्कृत,अग्रेंजी आदि भाषा के नाटकों का अनुवाद भी हुआ है । अनुवादकों में राधाकृष्ण दास,प्रतापनारायण मिश्र प्रमुख हैं । 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'ब्राह्मण' ,'हिंदी प्रदीप' , 'आनन्द्कादाम्बिनी'आदि प्रमुख पत्रिकाएँ इसी युग की देन हैं । इस युग के रचनाकारों ने जहाँ एक ओर जनमानस के मनोभावों के अनुकूल भाषा को व्यवस्थित और आदर्श रूप प्रस्तुत किया तो वहीं दूसरी ओर उसमें व्याकरण की अशुद्धिया,पद-विन्यास, वाक्य-विन्यास सम्बंधी अनेक अनियमताएं बनी रही ।

हिंदी साहित्यकोश में भारतेंदु का उदय महत्वपूर्ण है ।उन्होंने अपनी प्रतिभा के आलोक मे तत्कालीन समाज एवं साहित्य को आलोकित किया । उन्होनें राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'की अरबी-फारसी तथा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतनिष्ठ अतिवादी भाषा नीति को त्याग कर मध्यमार्ग को स्वीकार किया । उन्होने संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ साधारण बोलचाल के उर्दू,फारसी,अग्रेंजी के विदेशी शब्दों, तद्भव और देशी शब्दों का प्रयोग कर भाषा का आदर्श एवं व्यवस्थित रूप प्रस्तुत किया । भाषा का यह स्वरूप भरतीय जनता के मनोभावों के अनुकूल और सर्वमान्य था। भारतेंदु ने कहावतों और मुहावरों का प्रयोग कर भाषा को सजीव और व्यवस्थित रूप प्रदान किया । भाषा का यह स्वरूप भारतीय जनता के मनोभावों के अनुकल और सर्वमान्य था । भारतेंदु ने कहावतों और मुहावरों का प्रयोग कर भाषा को सजीव रूप प्रदान किया ।

हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान

भारतेंदु हरिश्चंद्र एक श्रेष्ठ पत्रकार थे । उन्होंने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' (बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका') और 'बालाबोधिनी' पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन कर साहित्य के अलग-अलग विषयों पर लिखा । इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने न केवल नई तरह की भाषा का विकास किया,बल्कि आधुनिक भारत की समस्याओं पर भी खुलकर चिंतन किया। वे इन पत्रिकाओं के माध्यम से सदैव देशप्रेम की भावना विकसित करने की कोशिश किया करते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इन पत्रिकाओं में ढेरों निबंध, आलोचना और रिपोर्ताज लिखें। आलोचकों के अनुसार इन विधाओं की स्थापना भारतेंदु और इनके साथियों के प्रयासों से ही हुआ। अपनी पत्रिकाओं में विविध विषयों पर आलेख लिखकर भारतेंदु ने अन्य लेखकों को भी प्रेरित किया। आलोचकों के अनुसार उनके साथी बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र की लेखनी पर भारतेंदु हरिश्चंद्र का स्पष्ट प्रभाव दिखता था। उन्होंने दिखाया कि कैसे साहित्य से इतर विधाओं में आम जीवन से जुड़े विषयों पर भी लिखा जा सकता है। इसी कारण उनकी पत्रिकाएं आम जनमानस में हिन्दी के प्रति रुचि जागृत करने में प्रभावशाली सिद्ध हुई। भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिकाओं को इस तरह देख सकते हैं-

कविवचन सुधा- भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा संपादित यह एक हिन्दी समाचार पत्र था। इसका प्रकाशन 15अगस्त1868ई० को वाराणसी में आरम्भ हुआ। यह एक क्रांतिकारी घटना थी। यह कविता-केन्द्रित पत्र था। इस पत्र ने हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता को नया आयाम प्रदान किया। हिन्दी के महान समालोचक डॉ रामविलास शर्मा लिखते हैं कि-"कविवचन सुधा का प्रकाशन करके भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक नए युग का सूत्रपात किया।"कविवचन सुधा में साहित्य तो छपता ही था उसके अलावा समाचार, यात्रा, ज्ञान-विज्ञान, धर्म,राजनीति और समाजनीति विषयक लेख भी प्रकाशित होते थे।

इससे पत्रिका की जनप्रियता बढ़ती गई।लोकप्रियता इतनी बढ़ी की उसे मासिक से पाक्षिक और फिर साप्ताहिक कर दिया गया। प्रकाशन के दूसरे वर्ष यह पत्रिका पाक्षिक हो गई थी और 5 सितंबर 1873से साप्ताहिक।
'कविवचन सुधा'के दूसरे प्रकाशन वर्ष में प्रथम पृष्ठ के नीचे निम्नलिखित पद छपता था -

"निज-नित नव यह कवि वचन सुधा सकल रस खानि।
पिवहु रसिक आनंद भरी परमलाभ जियजानी ।।
सुधा सदा सुरपुर बसे सो नहीं तुम्हारे जोग।
तसों आदर देहु अरु पिवहु एही बुध लोग।।"

भारतेंदु हरिश्चंद्र के टीका-टिपाणियों से अधिकारी तक घबराते थे और 'कविवचन सुधा' के अंक से रुष्ठ होकर काशी के मजिस्ट्रेट ने भारतेंदु हरिश्चंद्र के पत्रों को शिक्षा विभाग के लिए लेना भी बंद कर दिया था। सात वर्षों तक कविवचन सुधा का संपादन/प्रकाशन करने के बाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उसे अपने मित्र चिन्तामणि धरफले को सौंप दिया।

हरिश्चंद्र मैगजीन- यह एक मासिक पत्रिका थी। यह पत्रिका 15 अक्टूबर1873 ई.को काशी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने प्रारम्भ किया था। इसका नाम बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया गया । उनके जीवनकाल मे ही यह पत्रिका प्रसिद्ध हो चुकी थी। इस पत्रिका में पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना,ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक, तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ और व्यंग आदि प्रकाशित हुआ करते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी इस पत्रिका के माध्यम से नई भाषा का गठन किया। इसके लिए उन्होंने खड़ीबोली का आवरण लेकर उसमें उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया,वहीं तत्सम और उससे निकले तद्भव शब्दों को भी प्रयाप्त महत्व दिया। इसके साथ ही भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कठिन और अबूझ शब्दों का प्रयोग वर्जित कर दिया।

हरिश्चंद्र चंद्रिका- यह एक मासिक पत्रिका थी। इसका प्रकाशन1873ई० में हुआ। हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले इसी पत्रिका में प्रकट हुआ। जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कंठापूर्वक दौड़कर अपनाया,उसके दर्शन इसी पत्रिका में हुए। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने नई सुधरी हुई हिन्दी का उदय इसी समय से माना है। उन्होंने कालचक्र नाम की अपनी पुस्तक में लिखा है कि- 'हिन्दी नई चाल में ढली सन् 1873ई०।' इस पत्रिका के अविभार्व के साथ ही नए-नए लेखक भी तैयार होने लगे। 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में भारतेंदु हरिश्चंद्र स्वयं तो लिखते ही थें, बहुत से और लेखक भी उन्होंने तैयार कर लिए थे। स्वर्गीय पंडित बदरीनारायण चौधरी भारतेंदु हरिश्चंद्र के संपादन-कौशल की बड़ी प्रशंसा किया करते थे। बड़ी तेजी के साथ वे इस पत्रिका के लिए लेख और टिप्पणी को लिखते और सामग्री को अच्छे ढंग से सजाते थे। गद्य-साहित्य के इस आरंभ काल में ध्यान देने की बात यह है कि इस पत्रिका ने हिंदी की नई-नई विधाओं को शिखर पर पहुंचाया।

बालाबोधिनी- 1जनवरी1874 ई.को भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'बालाबोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। यह हिन्दी मासिक पत्रिका बनारस से प्रकाशित होती थी। यह महिलाओं से संबंधित पत्रिका थी। महिलाओं को शिक्षित एवं जागृत करने में इस पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस संदर्भ में रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि-" सम्वत् 1931में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्त्री-शिक्षा के लिए बालाबोधिनी पत्रिका निकाली थी।"

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की कविताओं की विशेषताएँ

आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारम्भ उन्नीसवीं सदी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने नाटक, निबंध, कविता, आदि कई साहितिक विधाओं को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हुए साहित्य और समाज के सम्बन्धों को नए ढंग से समझने और समझाने का प्रयास किया। वे अपने स्वरूप और संरचना दोनों दृष्टियों से रूढ़िबद् श्गारपरक और सामंत वर्ग का अनुरंजन करने वाला कवि लिखते थे। भारतेन्दु ने लगभग 70 के करीब काव्यग्रंथों की रचना की है, एक कवि के रूप में उनका व्यक्तित्त्व कितना वैविध्यमय, बहुआयामी और विकासशील रहा है, इसका अध्ययन हम उनके काव्य के विशेषताओं के माध्यम से कर पायेंगे। भक्तिपरक कवि- भारतेंदु ने ईश्वर का गुणगान उनके रूप सौंदर्य धर्म की दार्शनिक था आदि जैसी भक्ति पर कविताएं लिखी। भक्ति के क्षेत्र में सूरदास उनके प्रिय कवि रहे हैं। उन्होंने भक्ति सर्वस्व (1870 ई॰) वैशाख महत्तम(1872 ई॰), देवी छद्म लीला(1873 ई॰), प्रेम मालिका(1874 ई॰), प्रातः स्मरण मंगल पाठ (1873 ई॰), दैन्य प्रलाप(1873 ई॰) आदि कविताओं में राधा-कृष्ण प्रेम, प्रेम के महत्व, ईश्वर के प्रति निवेदन का वर्णन किया है। प्रेम मालिका कविता के इन पंक्तियों के माध्यम से हम उनकी भक्ति को देख सकते हैं।

अरी सखी गाज परौ ऐसी लोक-लाज पै
अरी हरि या मग निकसे आई अचानक
अहो प्रभु अपनी और निहरौ
अहो हरि ऐसी तौ नहिं कीजै
अहो हरि वह दिन बेगि दिखाओ
अहो हरि वेहू दिन कब ऐहैं....

श्रृंगारपरक काव्य- परंपरा का अनुपालन करते हुए भारतेंदु ने प्रकृति सौंदर्य, प्रेम सौंदर्य एवं श्रृंगारपक रचनाएं भी लिखी। श्रृंगारपक के क्षेत्र में बिहारी उनके प्रिय कवि रहे हैं। श्रृंगारपक प्रमुख कविताएं हैं-
प्रेम सरोवर(1873 ई॰), प्रेमाश्रु-वर्षण(1877 ई॰), वसंत होली(1874 ई॰) तथा प्रेम तरंग(1877 ई॰) आदि। भारतेंदु अपनी रचनाओं में प्रेम मार्ग की कठिनाइयों, प्रेम की परिभाषा और जीवन में उनके सार का स्वछंद ढंग से निरूपण करते थे। प्रेम सरोवर में वे लिखते हैं-

प्रेम-सरोवर की यहै तीरथ विधि परमान।
लोक वेद को प्रथम ही देह तिलांजलि दान।
अति सूछम कोमल अतिहि अति पतरो अति दूर।
प्रेम कठिन सब सें सदा नीत इक रस भरपूर।...

देशभक्ति कविताएं- जहां तक भारतेंदु की राष्ट्रभक्ति का सवाल है उन्होंने देश भाषा के प्रति पीला देश-दशा के प्रति पीड़ा, देसवासियों की दुर्गति पर शोक और अवसाद, देश के रूढ़ि-जर्जर स्वरूप पर खेद और आक्रोश, अपने परंपरा पर गर्व, पराधीनता और आर्थिक शोषण से उसकी मुक्ति की प्रबल आकांक्षाओं को अपने कविताओं का विषय बनाया। उन्होंने 1881 में विजय वल्लरी और 1884 में विजयनी विजय बैजयंती में भारत के दुख कष्टों का वर्णन किया। विजय वल्लरी में भारतेंदु ने अफगान युद्ध में भारतीय सैनिकों की वीरता पर हर्ष व्यक्त किया। भारतेंदु की बदलती हुई समझ "नये जमाने की मुकरी" में दिखाई देती है। जिनकी रचना उन्होंने 1884 में की थी।

भीतर-भीतर सब रस चुसै।
हँसि-हँसि के तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज।
क्यों सखि सज्जन नहीं अंग्र।

उपनिवेश इस उदारवाद की पोल इस नौकरी में पूरी तरह खुलकर सामने आ जाती हैअंग्रेज अब लड़ाई झगड़े से नहीं हंसकर चालबाजी आ करके लूटने में लगे हैं

समाज सुधार और नवजागरण- भारतेंदु समाज की रूढ़िवादिता के विरोधी थे. छुआछूत, बाल विवाह, जन्मपत्री देखकर विवाह करना, विदेश गमन पर रोक, मूर्ति पूजा आदि ढकोसले अंधविश्वासों का खुलकर विरोध करते थे। नारी को पुरुष के बराबर मानने के पक्षधर थे। वे कहते हैं-

जो हरि सोई राधिका जो शिव सोई शक्ति।
जो नारी सोई पुरुष यामैं कछु न विभक्ति।।

भारतेंदु ईश्वर चंद्र विद्यासागर के भी संपर्क में आए। उन्होंने विधवा विवाह के पक्ष में पौराणिक ग्रंथों से काफी सुबूत जुटाए और वह स्वयं विधवा विवाह के समर्थक रहे। वैदिक हिंसा ना भवति में वे लिखते हैं-

नष्टे मृते प्रवजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पंच स्वायत्सु नारीणां स्वागत पतिरूयो।।

भारतेंदु शिक्षा और अपनी भाषा के प्रति उदासीनता के लिए भी चिंता व्यक्त करते हैं, साथ ही वे नवजागरण के पक्षधर थे। उन्होंने अंग्रेजों के साथ निज भाषा उन्नति का भी जोर-शोर से पक्ष लिया। "हिंदी की उन्नति पर व्याख्यायन" कविता में भी लिखते हैं-

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

अंग्रेजी पढ़ने के पक्षधर होते हुए भी वे इस बात को स्पष्ट करते थे कि अंग्रेजी के साथ-साथ अपनी भाषा का ज्ञान होना भी आवश्यक है। वह कहते हैं-

अंग्रेजी पति के जदपि सब गन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।।

निष्कर्ष:- संक्षेप में अब यदि हम आकलन करें तो देखते हैं कि भारतेन्दु एक कवि के रूप में एक और तो अपनी परंपरा से जुड़ने का प्रयास करते हैं, तो दूसरी और काव्य को जनता के साथ भी जोड़ना चाहते हैं। यह काम शिल्प के स्तर पर वे लोकराग, लोकसंगीत, लोकछंदों को अपनाकर करते हैं तो विषय-वस्तु के स्तर पर समाज और जनजीवन के तमाम दुख दर्दों को अपनी कविता का विषय बनाते थे। राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम, समाज सुधार- वे सब भारतेंदु की कविता का विषय बनते थे। अपने काव्य विकास के दौर में वे अंग्रेजी राज्य की साम्राज्यवादी, उपनिवेशवादी मानसिकता को भी समझते हैं और खुलकर उनके विरोध में भी खड़े होते हैं। विशेषक "भारत दुर्दशा" में आई उनकी कविताएं और "हिंदी भाषा" पर उनका काव्य व्याख्यान इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसलिए उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं को राष्ट्रीय नवजागरण की प्रवृत्तियों के रूप में ही देखा समझा जाना चाहिए।

योगदानकर्ता और संपादकीय बोर्ड

- चित्रांकन- स्वेता पंडित, ख़ुशबू (2nd Sem Honours)
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र की जीवनी और कृतित्व- अंजली कुमारी नोनिया (2nd Sem Honours)
- नाटककार के रूप में भारतेंदु हरिश्चंद्र- नबीहा खातून (2nd Semester Honours)
- हिंदी निबंध के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान- शीतल मण्डल (2nd Sem Program)
- हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान- पूनम कुमारी मिश्र (2nd sem Honours)
- हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान- रिता मिश्र (2nd Sem Honours)
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र की कविताओं की विशेषताएँ- अनुषा भारती (2nd Sem Honours)

हिन्दी विभाग शिक्षक गण

डॉ॰ अनीता मिश्र	सह- प्रवक्ता
डॉ॰ जगमोहन सिंह	सहायक- प्रवक्ता
नीलम मिश्र तिवारी	एस. ए. सी. टी
डॉ॰ कृष्णा सिंह	एस. ए. सी. टी
राजेन्द्र महतो	एस. ए. सी. टी
प्रियंका सिंह	एस. ए. सी. टी

24

धन्यवाद

25